ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol.-6* Issue-7* August- 2021
Innovation The Research Concept

नगरों की उत्पत्ति: रतनपुर एक अध्ययन
Origin of The Towns : Ratanpur A Study

Paper Submission: 05/08/2021, Date of Acceptance: 15/08/2021, Date of Publication: 25/08/2021

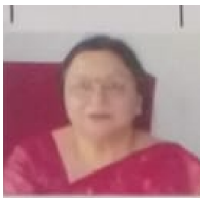

आभा रुपेन्द्र पाल
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
इतिहास अध्ययनशाला,
पं.रविशंकर शुक्ल
विश्वविद्यालय, रायपुर,
छत्तीसगढ़, भारत

नगरों की उत्पत्ति और विकास के कई कारक हैं। विश्व इतिहास में कोई काल ऐसा नहीं है जब कुछ नए नगर उत्पन्न या विकसित न हुए हों। नगरों के जन्म एवं विकास के लिए मुख्यतः दो प्रकार की शक्तियां उत्तरदायी हैं - प्रथम कृत्रिम या प्रशासकीय शक्तियां और दूसरे सहज या प्राकृतिक शक्तियां। प्रशासकीय एवं सुरक्षा केन्द्र, क्षेत्रीय राज्य किले, महल आदि कृत्रिम शक्तियों के परिणाम हैं और सामाजिक, सांस्कृतिक अथवा आवश्यकताओ से प्रेरित होकर जब नगरों का जन्म व विकास एक स्वाभाविक प्रक्रिया मंे होता हैं, तो वह एक सहज शक्ति का परिणाम है। छत्तीसगढ़ की प्राचीन राजधानी, इतिहास प्रसिध्द नगर, प्रसिध्द धार्मिक केन्द्र रतनपुर एक ऐसा नगर है जिसके निर्माण एवं विकास में इन दोनों प्रकार की शक्तियों का योगदान है।

वर्तमान रतनपुर तो करीब एक हजार वर्ष पूर्व कल्चुरी राजा रत्नदेव ने बसाया था, किन्तु यह भूमि बहुत पुरानी है। यह चारों युगों की प्राचीन राजधानी थी। महाभारत काल में यहां श्री कृष्ण और अर्जुन का आगमन हुआ था - तब यहां राजा मोरध्वज का शासन था और इस महान राजा के अतिथि सेवा एवं बलिदान की स्मृति में वर्णित कान्हार्जुनी तालाब अभी भी रतनपुर में है। यहां शैव, वैष्णव, बौध्द और जैन सम्प्रदाय का समन्वय होता था। यहां से प्राप्त पुरातात्विक ऐतिहासिक साक्ष्यों से पुष्ट होता है कि यह नगर तांत्रिको को सम्प्रदाय से संबंधित था। यहां आज भी तांत्रिक पूजा होती है और यहां का प्रसिध्द महामाया मंदिर और कालभैरव एक सिध्दपीठ के रूप में स्वीकृत है। यहां असंख्य सती चौरे और सती मंदिर भी हैं। रतनपुर निःसंदेह एक धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्व का नगर है। नगर अक्सर शिक्षा के केन्द्र बने। यह सिध्दांत भी रतनपुर पर लागू होता है।

There are a number of factors responsible for the origin and growth of towns. There is no period in the history of the entire world, when the towns and cities were not originated or developed. For the birth of Towns two mojor forces are responsible- first artificial or administrative forces and secondly natural or simple forces. Administrative and defece centres, forts, palaces are the results of artifical forces whereas some towns grow as a result of socio-cultural religious needs- they are religious, cultural centres- these are natural forces. Ratanpur, the ancient capital of Chhattisgarh is made up of both the forces- natural and articificial!

The present Ratanpur was founded by Kalchuri ruler Ratandev about one thousand years back – but this land is very very old, This was the capital of all four Yugas- In the periad of Mahabharat Lord Krishna and Arjun had arrived here- king Moradhwaj was the ruler of this place at that time and the signs of this great King's sense of hospitility and self sacrificeare are still found in the pond of Kanharjuni, which was made in the memory of his self sacrifice. The archeological evildences prove that this town was associated with tantric sects. This is still a centre is tantric worship and the famous Mahamaya temple and Kaalbhairav are accepted Tantric Siddhapeethas. There are innunerable Sati chauras here and a Sati temple too. There is no doubt that Ratanpur is a town of religious and cultural importance. Towns also turned into educational centres. This theory also fits right on Ratanpur.

मुख्य शब्दः नगर, सामाजिक संरचना, पौराणिक महत्व, राजनैतिक कारक ।

Cities, Social Structure, Mythological Significance, Political Factors.

प्रस्तावना

मानव बसाव के रूप में नगरों का इतिहास मानवीय सभ्यता के प्रारंभ से ही देखा जा सकता है। नगरों की उत्पत्ति एवं विकास के कई कारक हैं। विश्व इतिहास में कोई काल ऐसा नहीं हैं जब कुछ नए नगर उत्पन्न या विकसित न हुए हों। नगरों की उत्पत्ति प्रायः एक छोटी सी बस्ती के रूप में होती हैं, जिसमें नगरीय कार्यों का प्रवेश या विस्तार किसी भी समय हो सकता है। प्रारंभ में ही या बाद की अवस्थाओं में जब उसका आकार भी सामान्यतया बढ़ जाता है। एक निश्चित समय पर परिस्थितिवश एक बस्ती वास्तविक नगर के रूप में परिवर्तित हो जाती है। जन्म से लेकर एक निश्चित समय तक नगर का आकार सामान्यतया बढ़ता जाता है। उत्थान और पतन इतिहास का शाश्वत नियम है। चरम बिन्दु पर पहुंच कर अथवा विनाशकारी परिस्थितियों में विघटन भी प्रारंभ होता है। नदी-घाटी, सभ्यताओं के केन्द्र विशाल वैभवशाली नगर अब नष्ट हो चुके हैं और अनेक नए-नए नगर अस्तित्व में आ चुके है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र परम्परागत इतिहास का विषय हैं अतः उसकें लेखन में ऐतिहासिक शोध प्रविधि के अंर्तगत अभिलेखगारीय शोधविधि का प्रयोग किया गया हैं। शोध सामग्री के संकलन हेतु अभिलेखागार और पुस्तकालयों से सामग्री प्राप्त कर विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग कर शोध पत्र का लेखन किया गया ताकि उचित निष्कर्ष तक पंहुचा जा सके।

अध्ययन का उददेश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उददंशय छत्तीसगढ़ कें प्राचीनतम गर रतनपुर की उत्पत्ति के कारकों को ढूंढना और उनका विश्लेषण समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों कें नजरिये से करना हैं। शोध पत्र सिद्धान्तों पर आधारित हैं-नगरीकरण की उत्पत्ति सिद्धान्त और नगर की सामाजिक संरचना के तथ्यों का विश्लेषण करते हुए रतनपुर को उस खांचे में रखकर देखने का प्रयास किया गया हैं। रतनपुर की प्राचीनता तो सर्वमान्य हैं किन्तु उसे सिद्धान्तो के आइने में रखकर अध्ययन करने का प्रयास करना आवश्यक हैं ताकि उसकी उत्पत्ति के कारणों को भी अध्ययन किया जासकें।

यह सामान्यतः स्वीकृत तथ्य है कि नगरों की उत्पत्ति एक बस्ती के रूप में होती है1। पर पहला नगर कब बसा और कौन सा था। इस पर विवाद है।1 ए.बी. गैलियन का कहना है कि पूर्व पाषाण युग मंे जब मानव गुफाओं से निकलकर बाहर आया और पत्तों व शाखाओं की मदद से उसने झोपडियां बनाई, तब यह नगरीकरण की ओर पहला कदम था। उत्तर पाषाण युग में कृषि एवं पशुपालन के साथ मानव ने सुरक्षा भावना से सामुहिक रूप से रहना प्रारंभ किया। इस तरह बस्तियां अस्तित्व में आई, जो विकसित होकर ग्राम और नगर में परिवर्तित होती गई।

नगरों के जन्म तथा विकास के लिए दो प्रकार की शक्तियां उत्तरदायी हैं-प्रथम कृत्रिम या प्रशासकीय शक्तियां दूसरे सहज या प्राकृतिक शक्तियां। प्रशासकीय केन्द्र अथवा मुख्यालय सुरक्षा केन्द्र, क्षेत्रीय राजधानियां किले, महल, राजनैतिक प्रभाव केन्द्र आदि कृत्रिम शक्तियों के परिणाम है। दूसरी ओर क्षेत्रों की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक आवश्यकताओ के द्वारा स्वतः प्रेरित होकर कुछ नगरों का जन्म या विकास स्वाभाविक रूप से होता है। इस दशा में नगरों को बसाने या विकसित करने के उद्देश्य से जान-बुझकर कोई प्रयास नहीं होता बल्कि नगरीय कार्यों के सम्पादन की उत्कट आवश्यकता और परिस्थिति की सहज अनुकूलता के कारण नगरों का विकास स्वतः ही हो जाता है। अधिकांशतः इन दोनों तरह की शक्तियों ने भिन्न-भिन्न से मिलकर एक साथ कार्य किया है।

नगरों की उत्पत्ति के मूल में आर्थिक सुधार भी महत्वपूर्ण है। कृषि उत्पादन मानव निर्वाह के लिए सबसे अधिक आवश्यक है, क्योकि एक तो ये मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकताओं से संबंधित है और दूसरे ये अनेक अन्य क्रियाओं के लिए अनिवार्य आधार भी है2। मैक्स बेबर के अनुसार नगर वे बसाव है, जिसके निवासी मुख्यतः व्यवसाय व वाणिज्य में लगे है। अर्थात नगर आर्थिक दृष्टि से उद्योग या वाणिज्य से जुडा होना चाहिए। इसके अलावा उसे आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति का केन्द्र भी होना चाहिए। बेटरो ने समृध्दि और सम्पदा को नगर का आधार माना है3। इस आर्थिक आधार के अतिरिक्त सुरक्षा स्थल, दुर्ग, महल, मंदिर, मेले और सड़कें भी नगरों के जन्म व विकास का कारण बने। कुछ नगर मंदिर, मठ, व मेले लगने के कारण प्रसिध्द हुए। कुछ सड़कों के समानान्तर या दो सड़कों के मिलन स्थल या मध्यवर्ती स्थलों पर व्यापारिक महत्व के कारण विकसित हुए तो कुछ दुर्ग या महल के निकट बसी बस्तियों में विकसित हुए। इस प्रकार प्राचीन काल से लेकर आज तक नगरों के विकास के अनेक कारण मौजूद रहे है।

स्पष्ट है कि नगर की सामाजिक संरचना कई तथ्यों पर आधारित है। वह निर्भर करता है इस तथ्य पर कि नगर का अस्तित्व किन गतिविधियों पर आधारित है-धार्मिक, शैक्षणिक, व्यापारिक, औद्योगिक, राजनैतिक अथवा सांस्कृतिक। नगर संभवतः इसलिए महत्वपूर्ण नहीं होते कि वह स्वयं अपने लिए क्या कर रहे हैं । बल्कि उनकी महत्ता इस बात मे अधिक है कि वे आसपास अथवा दूरगामी स्थानों के लिए कितने महत्वपूर्ण हैं। ऐतिहासिक क्रम में नगरीय संरचना के मूल हित अलग-अलग रहे हैं। कुछ धार्मिक महत्व के स्थान धार्मिक गतिविधियों से जुड़े और शिक्षा तथा धर्म का केन्द्र बने, कुछ राजनैतिक, प्रशासनिक गतिविधियों से जुडकर राजधानी बनें तो कुछ व्यापार, उद्योग से जुडकर औद्योगिक व्यापारिक केन्द्र बने। नगर का स्वरूप उसकी संरचना पर निर्भर करता है।

मध्यप्रदेश के दक्षिण-पूर्वी भू-भाग पर स्थित छत्तीसगढ़ का एक विशिष्ट ऐतिहासिक-सांस्कृतिक महत्व प्राचीन काल से ही रहा है। अरण्य की गोद में इठलाता, महानदी और शिवनाथ की घाटी में क्रीड़ा करता, 36 गढ़ों से परिपूर्ण यह क्षेत्र उपजाऊ और घनी आबादी का है। प्राचीन काल में ये गढ़ अथवा दुर्ग राज्य की सुरक्षा का महत्वपूर्ण साधन थे। गढ़ों के आसपास स्वाभाविक बस्तियां बसती गई, जिसके कारण कृत्रिम और सहज दोनों ही थे। छत्तीसगढ़ के नगरों में रतनपुर का विशेष ऐतिहासिक, राजनैतिक एवं धार्मिक महत्व रहा है। शिवनाथ नदी के उत्तर मंे स्थित रतनपुर कल्चुरीकालीन छत्तीसगढ़ की राजधानी, एक विशेष धार्मिक महत्व का केन्द्र, एक तांत्रिक स्थली और चारों युगों की प्रसिध्दि प्राप्त प्राचीनतम् नगर है।

रतनपुर का इतिहास गवाह है कि नगर के निर्माण एवं विकास में कृत्रिम अथवा प्रशासकीय राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक शक्तियां विद्यमान रही हैं। वर्तमान रतनपुर, लगभग एक हजार वर्ष पूर्व हैह्यवंशीय राजा रत्नदेव का बसाया हुआ नगर है, किन्तु यह भूमि बहुत पुरानी है। पहले यह मणीपुर नामक एक प्राचीन ग्राम था4। जिसे रत्नदेव ने नगर के रूप में परिवर्तित कर अपना नाम दिया और राजधानी के रूप मंे विकसित किया5। यह तथ्य इस विचारधारा को पुष्ट करता है कि नगरों का विकास क्रमिक रूप से बस्ती अथवा ग्रामों से हुआ है। अनुश्रुतियां बताती है कि महाभारत काल में यह राजा मोरध्वज (मयूरध्वज) का राज्य था और मोरध्वज-ताम्रध्वज के साथ श्री कृष्ण-अर्जुन की कथा यहीं घटित हुई थी। अतिथि सेवा में मोरध्वज के बलिदान की कथा श्री कृष्ण-अर्जुन अथवा कृष्णार्जुनी तालाब रतनपुर में अभी भी विद्यमान है6। एक और दंतकथा के अनुसार राजा रत्नदेव ने जगदम्बा महामाया के दर्शन एवं प्रेरणा से अपने पुरखों की राजधानी तुम्माण खोल (रतनपुर से 45 मील दूर) को छोड़कर7 रतनपुर को अपनी राजधानी बनाया था8। जनश्रुति के अनुसार रतनपुर चारों युगों की प्राचीन राजधानी थी। यह सतयुग में मणिपुर, त्रेता में माणिकपुर, द्वापर में कंचलयुग और तदुपरांत कलियुग में रतनपुर के रूप में प्रख्यात रही है9। उसकी यही प्रसिध्दि संभवतः उसके राजधानी बनने का कारण बनी होगी।

रतनपुर धार्मिक दृष्टि से एक विशेष महत्वपूर्ण नगर था जहां शैव, वैष्णव, बौध्द और जैन सम्प्रदाय का समन्वय होता था। यहां से प्राप्त पुरातात्विक सामग्री कल्चुरियों की देन है, जिसके अवलोकन से पता चलता है कि रतनपुर के कल्चुरी नरेश यद्यपि शैव थे, तथापि उन्होंने वैष्णव, बौध्द और जैन धर्म को भी संपूर्ण संरक्षण प्रदान किया था10। राजनैतिक और आर्थिक वैभव के साथ ही साथ इस काल में यहां का आध्यात्मिक वैभव भी पराकाष्ठा पर था। यह तांत्रिकों की आश्रय स्थली भी रही है, ऐसा तंत्र के ऐतिहासिक साक्ष्यों से प्रतीत होता है।

देवीखोल[11] की प्राचीनता, प्राचीन महामाया मंदिर, मंदिर के दक्षिण द्वार पर स्थापित कालभैरव की दूसरी शताब्दी ई. में निर्मित विशाल, अनगढ़ प्रस्तर प्रतिमा, जनमानस में बैठी हुई दंतकथाएं12 यह आभास देते है कि यह अपने काल में एक विकसित तांत्रिक स्थली रही होगी13। दसवीं शताब्दी से पूर्व यह स्थल नाथ सम्प्रदाय से संबंधित था। पुरातात्विक, खोजों से ही पता चल सकता है कि यह सिध्द शक्तिपीठ छत्तीसगढ़ या सम्पूर्ण भारत के प्रमुख तांत्रिक पीठों से एक तो नहीं है[14]।

रतनपुर में असंख्य सती चौरे भी हैं। यहां प्रतिवर्ष माघ पूर्णिमा को 'आठा बीसा' मेला उसी स्थान पर भरता है, यहां 28 रानियां सती हुई थी। वह सती मंदिर, खंडहर रूप में अभी भी वहां स्थित है। यहां महामाया मंदिर के पास भी एक सुंदर सती मंदिर है। ऐसे कई सती मंदिर और चौरे यहां बिखरे पड़े है[15]। प्रसिध्द जैन विद्वान मुनि कांतिसागर ने एक प्राचीन जैन ग्रंथ के हवाले से लिखा है कि, यहां पांच हजार वर्ष पूर्व नालंदा से भी प्राचीन विश्वविद्यालय था। यह प्रसिध्द शिक्षा केन्द्र था। निःसंदेह रतनपुर एक प्राचीन ऐतिहासिक नगर है[16]। जिसके विकास में धार्मिक तत्वों का विशेष महत्व रहा है। समाजशास्त्रीय विचारधारा जो कहती है कि सामान्यतः धार्मिक तत्वों के विशेष महत्व के स्थान जिनका आधार धार्मिक होता है, धार्मिक गतिविधियों से जुड़े नगर बनते हैं और शिक्षा तथा धर्म का केन्द्र बनते हैं, रतनपुर के संदर्भ में बिल्कुल सही उतरती है। अतीत में वह शिक्षा का केन्द्र था, पर उसका धार्मिक महत्व अभी भी कम नहीं हुआ है। रतनपुर का महामाया मंदिर अभी भी अपना महत्व और स्थान बनाए हुए हैं, जहां पूजा, आराधना और तांत्रिक पूजा आज भी होती हैं।

रतनपुर छत्तीसगढ़ की प्राचीन, पौराणिक राजधानी थी, जिसका महत्व मराठा काल तक रहा। राजधानी होने के वजह से यहां गढ़ भी था जो स्थापत्य कला का नमूना है। यहां का किला राजा बहारसाय का बनवाया हुआ है और इसका रूप, हाथी के आकार का है। इसके चारों ओर खाई बनी हुई है, जिसमें हमेशा जल भरा रहता है। यह राजधानी स्थित सैनिक महत्व का दुर्ग है। खाईं की वजह से शत्रु यहां आसानी से प्रवेश नहीं कर सकते थे। परकोटे की दिवारों में गोली चलाने के स्थान बने थे जिससे शत्रु पर प्रहार किया जा सके[17]। किले के खण्डहर की दिवारों पर खुदाई का उत्कृष्ट कार्य है उस पर अनेक मूर्तियां भी पाई जाती हैं। किले के आसपास ही यह सुन्दर नगरी बसी हुई थी। यहां से होकर और आसपास के क्षेत्रों में आवागमन के साधनों का विस्तार हुआ और यह व्यापारिक महत्व का भी क्षेत्र बना। राजधानी होने के नाते यह राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र था। वस्तुतः धार्मिक और ऐतिहासिक महत्व के अलावा सामरिक सुरक्षा, मार्ग संगम और अन्य भौगोलिक विशिष्टताओं के कारण ही रतनपुर नगर राजधानी के रूप में स्थापित तथा विकसित हुआ[18]। वैसे रतनपुर के आसपास के पहाड़ों में प्रागैतिहासिक काल के विभिन्न पाषाण उपकरण भी प्राप्त होते है[19]। बाबू रेवाराम ने "तवारीख श्री हैहय वंशीय राजाओ की" में और शिवदत्त शास्त्री ने 'रतनपुर आख्यतन' में रतनपुर के विषय में विस्तार से लिखा हैं। शासकीय रिपोर्ट्स में जे. डबल्यू चिशम की "सैटलमेंट रिपोर्ट" और मेजर पी. वान्स एगेन्यू की "द रिर्पोट ऑन द सूबा ऑफ द प्राविन्स ऑफ छत्तीसगढ़ में रतनपुर की जानकरी मिलती हैं।

निष्कर्ष

समाजशास्त्रीय एवं नगरीय भूगोलिक अनेक सिध्दांत रतनपुर नगर के अध्ययन में एकदम सही बैठते है। इस नगर का जन्म यदि प्रागैतिहासिक काल में एक बस्ती के रूप में हुआ तो इसके नगर रूप में विकास क्रम में कृत्रिम, सहज, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सभी आधार मौजूद हैं। राजधानी होने के नाते यह राजनीतिक महत्व का नगर था जो विकास का कृत्रिम क्रम हैं। धार्मिक और सांस्कृतिक केन्द्र होने के कारण इसकी उत्पत्ति और विकास को प्राकृतिक शक्ति के अंर्तगत भी स्वीकार किया जा सकता हैं। यदि समृद्धि और सम्पदा को भी नगर का आधार माना जाय, तो रतनपुर के-खंडहर और इतिहास इस आधार पर खरे उतरते हैं। सभी दृष्टिकोण से रतनपुर को प्राचीन नगर के रूप में स्वीकार करते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *ए. बी. गैलियन, द अरबन पैटर्न, केनेडा, 1969, पृ.62*
2. *मैक्स वेबर, एकोनोमी एंड सोसाइटी, न्यूयार्क, 1961, पृ. 62*
3. *जे. पार्थसारथी, रूरल पापुलेशन इन इंडिया-अर्बन सेटिंग, नई दिल्ली, 1984, पृ. 9*
4. *प्यारे लाल गुप्त, प्राचीन छत्तीसगढ़, रायपुर, 1973, पृ. 149*
5. *उपरोक्त, पृ. 92*
6. *बल्देव प्रसाद मिश्र, छत्तीसगढ़ का परिचय, 1955, पृ15-18*
7. *रायबहादुर हीरालाल, मध्यप्रदेश का इतिहास, 1939 पृ. 22 लगभग 1000 ई. में कलिंगराज नामक कल्चुरी राजपुत्र ने अपने बाहुबल से छत्तीसगढ़ को जीतकर तुम्माण खोल नामक नगर को जहां उसके पूर्वजों ने राज्य किया था अपनी राजधानी बनाया था। राजकुमार शर्मा, मध्यप्रदेश के पुरातत्व का संदर्भ ग्रंथ, भोपाल, 1974, पृ. 80*
8. *कलिंग का उत्तराधिकारी कमलराज (सन् 1020 ई.) और कमलराज का उत्तराधिकारी रत्नदेव (सन् 1045 ई.) था जिसने अपने नाम पर रतनपुर (आधुनिक नगर) नामक नगर बसाया था। तब उसने अपनी राजधानी तुम्माण से स्थानांतरित कर रतनपुर में स्थापित की थी। उपरोक्त, पृ. 88-89*
9. *राजू तिवारी, रतनपुर को सती का श्राप, बिलासपुर, 1996, पृ. 49 सभी ने इसे चर्तुयुग की महत्वपूर्ण नगरी माना हैं, किन्तु उसके नामों पर मतभेद हैं। सतयुग में इसका नाम हीरापुर था, त्रेतायुग में माणिकपुर और द्वापर में कंचलयुग था। लालाराम तिवारी एवं बैजनाथ प्रसाद स्वर्णकार, रतनपुर महात्म्य, 1983, पृ. 2,4,6*
10. *राजकुमार शर्मा, पूर्वोक्त, पृ. 289 एवं प्रगति पथ पर मध्यप्रदेश, 1:1 पृ. 104*
11. *रतनपुर क्षेत्र को तुम्माण के पूर्व देवीखोल के नाम से जाना जाता था, जिससे एक बात स्पष्ट होती है कि रतनपुर आज से नहीं, बल्कि काफी प्राचीन काल से पुण्य क्षेत्र रहा है। इसकी प्राचीनता पर सूक्ष्म अध्ययन करने से पता चलता है कि महामाया देवी के कारण ही इसका नाम देवीखोल पड़ा और महामाया ही प्राचीन विशुध्द तांत्रिक सिध्दशक्तिपीठ थी। राजू तिवारी, पूर्वोक्त, पृ. 32*
12. *स्थानीय लोगों का विश्वास है कि जब रतनपुर के महामाया मंदिर में तंत्र साधना की जाती थी उस समय काल भैरव के बारे में ऐसी किवदन्तियां हैं, जिससे उनके साक्षात् होने की बात प्रमाणित होती है। तंत्र शास्त्र के अनुसार बावन रहा होते हैं, जिनमें काल भैरव सबसे प्रमुख माने जाते हैं। उपरोक्त, पृ. 37*
13. *उपरोक्त, पृ. 7, 37*
14. *उपरोक्त, पृ. 32-33*
15. *प्यारेलाल गुप्त, पूर्वोध्दत, पृ. 151*
16. *उपरोक्त, पृ. 149*
17. *लालाराम तिवारी एवं बैजनाथ प्रसाद स्वर्णकार, पूर्वोक्त, पृ. 20*
18. *राजू तिवारी, पूर्वोक्त , पृ. 3*
19. *उपरोक्त, पृ. 4*